

मरुधन्वसु गिरेर्निर्जलप्रदेशेषु मरुर्नागिरिघन्वनोरिति मेदिनी ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

मृगयां परिधावन्समेषु मरुधन्वसु ॥ विध्यन्मृगान्शरैः शुद्धैश्च चारुसमहाबलः ॥ ११ ॥ भीमसेनस्तु विख्यातो महान्तं दंष्ट्रिणं बलात् ॥ निम्नन्नागशतप्राणो वने तस्मिन्महाबलः ॥ १२ ॥ मृगाणां सवराहाणां महिषाणां महाभुजः ॥ विनिर्घ्नस्तत्र तत्रैव भीमो भीमपराक्रमः ॥ १३ ॥ समातंगशतप्राणो मनुष्यशतवारणः ॥ सिंहशार्दूलविक्रांतो वने तस्मिन्महाबलः ॥ १४ ॥ वृक्षानुत्पाटयामास तरसवैवर्भञ्जच ॥ पृथिव्याश्च प्रदेशान्वेनादयं स्तुवनानि च ॥ १५ ॥ पर्वताग्राणि वै मृद्भन्ना दयानश्च विज्वरः ॥ प्रक्षिपन्पादपांश्चापि नादेना पूरयन्महीं ॥ १६ ॥ वेगेन न्यपतद्भीमो निर्भयश्च पुनः पुनः ॥ आस्फोटयन्स्वेडयंश्च तलतालंश्च वादयन् ॥ १७ ॥ चिरसंबद्धदर्पस्तु भीमसेनो वने तदा ॥ गर्जेद्वाश्च महासत्वाग्नेर्गेंद्राश्च महाबलाः ॥ १८ ॥ भीमसेनस्य नादेन व्यमुचंतं गुहाभयात् ॥ कचिद्वधवांस्तिष्ठंश्च कचिच्चोपविशंस्तथा ॥ १९ ॥ मृगप्रेप्सुर्महारौद्रे वने चरति निर्भयः ॥ स तत्र मनुजव्याघ्रो वने वनचरोपमः ॥ २० ॥ पद्भ्यामभिसमापेदे भीमसेनो महाबलः ॥ स प्रविष्टो महारण्येनादान्नदतिचाद्भुतान् ॥ २१ ॥ त्रासयन्सर्वभूतानि महासत्त्वपराक्रमः ॥ ततो भीमस्य शब्देन भीताः सर्पा गृहाशयाः ॥ २२ ॥ अतिक्रान्तास्तु वेगेन जगामानुस्ततः शनैः ॥ ततो मरुवरप्रख्यो भीमसेनो महाबलः ॥ २३ ॥ सददर्शमहाकायं भुजंगं लोमहर्षणं ॥ गिरिदुर्गसमापन्नं कायेनाद्यत्यकंदरं ॥ २४ ॥ पर्वताभोगवर्ष्माणमतिकायं महाबलं ॥ चित्रांगमंगजैश्चित्रैर्हरिद्रासदृशच्छविं ॥ २५ ॥ गुहाकारेण वक्त्रेण चतुर्दंष्ट्रेण राजता ॥ दीपाक्षेणातिताम्रेण लिहानंस्तं क्लिणीमुहुः ॥ २६ ॥ त्रासनं सर्वभूतानां कालांतकयमोपमं ॥ निःश्वासस्वेडनादेन भस्मसंयंतमिव स्थितं ॥ २७ ॥ सर्पमंसहसाभ्येत्यपृदाकुः कुपितो भृशं ॥ जग्रा हाजगरो ग्राहो भुजयोरुभयोर्बलात् ॥ २८ ॥ तेन संस्पृष्टगात्रस्य भीमसेनस्य वैतदा ॥ संज्ञामुमोहसहसावरदानेन तस्य हि ॥ २९ ॥ दशनागसहस्राणि धारयंति हियद्वलं ॥ तद्वलं भीमसेनस्य भुजयोरसमंपरैः ॥ ३० ॥ स तेजस्वी तया तेन भुजगेन वशीकृतः ॥ विस्फुरन्शनैर्कैर्भीमो नशशाकविचेष्टितुं ॥ ३१ ॥ नागायुतसम प्राणः सिंहस्कंधो महाभुजः ॥ गृहीतो व्यजहात्सत्त्वं वरदानविमोहितः ॥ ३२ ॥ सहिप्रयत्नमकरोत्तीव्रमात्मविमोक्षणे ॥ न चैनमशकद्दीरः कथंचित्प्रतिबाधितुं ॥ ३३ ॥ इति श्रीमहाभारते आरण्यके पर्वणि आजगरपञ्चमोऽध्यायः ॥ १७८ ॥ ॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

॥ ६३ ॥

स्वरिमाणं वर्ष्मशरीरयस्यतं ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ इत्यारण्यके पर्वणि नैलकंठीये भारतावदीये अष्टमसत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७८ ॥